निदेशक, रा.ज.सं. द्वारा स्वतंत्रता दिवस, 1998 पर दिया गया अभिभाषण

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान के मेरे साथियों, परिवारों के सदस्यों, प्यारे बच्चों,

आज हम अपने प्यारे भारत देश की आजादी के 51 वर्ष पूरे कर चुके हैं। 15 अगस्त, 1998 का यह दिन 52वां स्वतंत्रता दिवस है। पिछले स्वतंत्रता दिवस से आज तक देश भर में स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के भव्य समारोह आयोजित हुए। सन् 1857 से 1947 तक अनेकों माताओं के लाल, अनेकों पत्नियों के सौभाग्य सिन्दूर और अनेकों बहनों के भाई स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़कर वीरगति को प्राप्त हुए। गाँधी, पटेल, नेहरु जैसे महान नेताओं ने अपने प्रयासों से इस कार्य में पूरे राष्ट्र को एक करके अंग्रेजी साम्राज्य की नींव उखाड़ने का कार्य पूरा किया। 51 वर्ष का समय भारत जैसी पुरातन संस्कृति के लिये चाहे छोटा समय लगता हो पर आज के तेजी से बदलते हुए वातावरण में काफी लम्बा समय है। धीरे-धीरे 1947 से पहले जन्मे लोग कम हो रहे हैं और स्वतंत्रता के बाद पली-बढ़ी पीढ़ी राष्ट्रीय जीवन की मूल धारा में आ रही है। इस राष्ट्रीय त्यौहार पर आवश्यक है कि हम भूतकाल की अच्छी बातों का स्मरण करें, वर्तमान का लेखा-जोखा करें व आने वाले भविष्य के लिये उचित योजनाये बनायें।

पिछले 51 वर्षों में देश ने अनेकों उपलब्धियां हासिल की हैं। कृषि पर आधारित अर्थ व्यवस्था वाला देश एक प्रमुख औद्योगिक देश बन गया है जिसके पास विज्ञान व तकनीकी आधुनिकता की ओर बढ़ने वाली अर्थ व्यवस्था है। क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवां पर जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा हमारा भारत देश, कृषि व सिंचाई के क्षेत्र में हुई प्रगति के कारण अन्न उत्पादन के मामले में आत्म निर्भर हो गया है। हम रॉकेट बना रहे हैं, सेटेलाइट बना रहे हैं और अनेकों दबावों के बावजूद आणविक शस्त्रों के बारे में हाल ही के विस्फोटों से हमने बता दिया है कि हम अपनी स्वाधीनता व स्वावलंबन के बारे में बडे से बड़ा बलिदान देने में सक्षम हैं। हम पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा राष्ट्र के सभी नागरिकों के लिये जनतांत्रिक तरीकों से विकास के मार्ग पर अग्रसर हैं। आज देश में साक्षरता, स्वास्थ्य, आवास, पर्यावरण सुरक्षा जैसे विषयों तथा महिलाओं के अधिकारों, बाल मजदूरों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जातियों, विभिन्न भाषाओं, एवं सम्प्रदायों जैसी ज्वलंत समस्याओं पर ध्यान दिया जा रहा है। शायद ऐसे समय व अवस्था के लिये ही मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था:

आओ मिले सब देश बाँधव हार बनकर देश के,
साधक बने सब प्रेम से सुख शान्तिमय उद्देश्य के ।
क्या साम्प्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो,
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो ।।

अनेकता मे एकता वाले हमारे राष्ट्र के सामने अनेकों समस्यायें और चुनौतियां हैं । भूमि व जल जैसे संसाधन सीमित हैं पर जनसंख्या बढ़ती जा रही हैं । राजनीति अस्थिर वातावरण से गुजर रही है । सब नेता अपनी-अपनी ढफली और अपना-अपना राग गा रहे हैं। जनता में संकीर्ण स्वार्थपरक विचारधारा बढ़ती जा रही है और गिने चुने लोग ही व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण पर ध्यान दे रहे हैं । आज जब हम स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं तब यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति संकीर्ण विचारों को छोड़कर समूचे राष्ट्र के लिये सोचे, मनन करे और राष्ट्र की समृद्धि के लिये अपना योगदान करे । अगर समय रहते हुए इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाये गये तो देश को एक सार्वभौम विकासशील राष्ट्र बनाये रखना कठिन होता जायेगा ।

हमें इन सभी चुनौतियों से घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है । आवश्यकता है देश प्रेम की, एकता की, उद्योग व कठिन परिश्रम की । किसी ने सच ही कहा है "God helps those who help themselves" । हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों के साथ-साथ अपार जन-बल संसाधनों का समुचित उपयोग करते हुए पूरे राष्ट्र को आगे बढ़ाना है । साक्षरता एवं विशेषकर महिलाओं की शिक्षा, हमारे राष्ट्र के सर्वागीण विकास के लिये एक अत्यंत जरुरी लक्ष्य है जिसे शीघ्र ही प्राप्त करना है । हमें अपने अनुसन्धानों, तकनीकों व शिल्पों को परिस्थितियों व आवश्यकताओं के अनुरुप करना होगा । तभी विविधता वाले राष्ट्र का, इसके सभी भागों का, इसके सभी निवासियों का उत्थान सम्भव है ।

नवभारत के निर्माण के लिये सभी वर्गों के अनुशासित, सुशिक्षित तथा राष्ट्र भक्त होने की आवश्यकता है । सभी को मिल जुलकर प्रयत्न करना होगा । विशेषकर राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान के हम सभी वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों का यह कर्त्तव्य है कि हम तत्परता एवं लगन से अपना कार्य करें व देश के जल संसाधनों के विकास में अपना योगदान करें । जहां एक ओर हम अपने अधिकारों की बात करें, वहीं साथ-साथ हम राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों के निभाने की बात भी करें । आज आवश्यकता इस बात की है कि हम में से जो प्रतिभाशाली हों वे आगे बढ़कर अन्य साथियों का मार्गदर्शन करें तथा उन्हें

अपने दायित्वों को निभाने की कार्यकुशलता के लिये प्रेरणा दें । भारत जैसे बड़े राष्ट्र के विकास के लिये प्रत्येक क्षेत्र से जुड़े लोगों जैसे - नेताओं, किसानों, सैनिकों, वैज्ञानिकों, मजदूरों, महिलाओं तथा बच्चों को, नई बातों को अपनाने की रचनात्मक दृष्टि व प्रवृति अपनानी होगी । मुझे पूरी आशा है कि हम जरुर कामयाब होंगे ।

बहुत जल्द हम 21वीं सदी में प्रवेश करने जा रहे हैं । हमारी जनसंख्या भी बढ़कर 100 करोड़ के करीब हो गयी है । शहर बढ़ रहे हैं, खेती की जमीन में जल ग्रसन व लवणीकरण की समस्यायें बढ़ रही हैं । भूजल का स्तर नीचे जा रहा है । नदियों व भौमजल में प्रदूषण की समस्या राष्ट्र के सभी भागो में फैल रही है । कैंसर व एड्स जैसे रोग बढ़ रहे हैं । दूसरी ओर कृषि व सिंचाई में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग बढ रहा है । किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के सम्मिलित प्रयासों से खाद्यान उत्पादन बढ़ रहा है । कंप्यूटर व दूरसंचार में बहुत तेजी से विकास हो रहा है । साथ ही साथ शहरीकरण व औद्योगिकरण का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव बढ़ रहा है । परमाणु शक्ति जहां विकास का साधन है वहीं जरा सी गल्ती महाविनाश का कारण बन सकती है ।

आइये, आज के इस पावन राष्ट्रीय दिवस पर हम सब मिलकर यह प्रण करें कि हम अपने-अपने दायित्वों को कार्यकुशलता से निभाते हुए अपने प्यारे भारत देश के सर्वागीण विकास में अपना पूरा योगदान देंगे । अन्त में, मैं आप सबको स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बधाई देता हूँ ।

जयहिन्द !

***